# St. PAUL TEACHER'S TRAINING COLLEGE

BIRSINGHPUR SAMASTIPUR

**(A constituent unit of L.N.M.U, DARBHANGA)**

## BACHELOR OF EDUCATION

**Session – 2021 – 23**

# ASSIGNMENT

**Course : - EPC 04 Understanding the Self**

**Submitted by : -**

**Name : - KANCHAN KUMARI**

**Class Roll No : - 78**

**Section : - B**

**University Roll No : - 2241307**

09/10

Kanchan kumari
Signature of Student

Signature of Lecturer

*Date of receiving assignment .....*

चिन्तन से आप क्या समझते हैं ? चिन्तन की विशेषताएँ एवं प्रकार बतायें ।

:- प्रस्तावना :-

चिन्तन एक मानसिक प्रक्रिया है और ज्ञानात्मक व्यवहार का जटिल रूप है । यह शिक्षण, स्मरण, कल्पना आदि मानसिक क्षमताओं से जुड़ा रहता है । प्रायः सभी प्राणियों में सोचने समझने एवं चिंतन करने की क्षमता होती है परंतु मनुष्य बुद्धिबल एवं चिन्तन से अन्य प्राणियों से विकसित प्राणि है । मनुष्य की प्रगति मुख्यतः उसके चिंतन पर आधारित है और वह इसके उपयोग से वह अपनी कई प्रकार की समस्याओं को हल करता है । सभी मनुष्यों से सोचने एवं समझने की क्षमता समान नही होती है किन्ही में यह क्षमता निम्न स्तर पर होती है तो कई मनुष्यों में यह माध्यम से उच्च स्तरीय होती है । कुछ मनुष्यों में यह क्षमता उच्चतम स्तर तक भी होती है । विचारों के आदान - प्रदान में व्यक्ति चिन्तन का प्रयोग करता है । चिन्तन को इन क्षमताओं से पूर्णतया अलग नही किया जा सकता चिंतन को हम मानसिक विचार की अवस्था भी कह सकते हैं अर्थात व्यक्ति एक विचारशील अवस्था का नाम चिंतन है ।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers Training
Birsinghpur
Mahuri, Samastipur

विचार का अर्थ है कि विभिन्न दृष्टियों से एक बात को देखने अथवा समझने का प्रत्यन करना ।

चिन्तन का अर्थ :—

अपनी दैनिक बातचीत में हम चिन्तन शब्द का प्रयोग कई मनो-वैज्ञानिक क्रियाओं के लिए करते हैं । उदाहरण स्वरूप अपना आनौपचारिक परिचय देते हुए जब मैं यह कहता हूँ कि मैं उन दिनों के बारे में सोच रहा हूँ जब मैं कॉलेज में विद्यार्थी था ।

तो यहाँ मैं सोच (चिन्तन) शब्द का प्रयोग मनोवैज्ञानिक क्रिया याद के लिए कर रहा हूँ । इसी प्रकार जब बच्चा कहता है कि मैं उस बंगले के बारे में सोच रहा हूँ जो मैं अपने लिए बनाऊँगा तो वस्तुतः वह कल्पना कर रहा है । इसी प्रकार डर से आती हुई किसी अस्पष्ट चीज को देखकर यदि कोई व्यक्ति कहता है मैं यह सोचता हूँ कि वह टैक्सी है तो वह केवल अपने प्रशक्षीकरण की ही व्याख्या कर रहा है ।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Mahuri, Samastipur

चिन्तन की परिभाषा :—

मनोवैज्ञानिक ने चिंतन को अनेक रूपों में परिभाषित किया है ।

रॉस के अनुसार :—
" चिन्तन मानसिक क्रिया का भावनात्मक पक्ष या मनोवैज्ञानिक वस्तुओं से संबंधित मानसिक क्रिया है ।"

* गैरेट के अनुसार :—
" चिन्तन एक प्रकार का अव्यक्त एवं अदृश्य व्यवहार होता है जिसमें सामान्य रूप से प्रतीकों (बिम्बों, विचारों, प्रत्यय) का प्रयोग होता है ।"

* मोहसिन के अनुसार :—
" चिन्तन समस्या समाधान संबंधी अव्यक्त व्यवहार है ।"

* कागन एवं हैवमेन के अनुसार :—
" चिन्तन प्रतिमाओं प्रतिकाओं, संप्रत्ययों, नियमों एवं मध्यस्थ इकाईयों का मानसिक परिचलन है ।"

चिन्तन के प्रकार

चिन्तन को मनोवैज्ञानिकों ने कई

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

कई प्रकारों में बाँटा है :—

(i) प्रत्यक्ष बोधात्मक या मूर्त चिन्तन :—

यह चिन्तन का अत्यंत सरल रूप है। प्रत्यक्ष बोध या अप्रत्यक्षीकरण ही इस प्रकार के चिन्तन का आधार है।

(ii) संप्रत्यात्मक या अमूर्त चिन्तन :—

प्रत्यक्ष बोधात्मक चिंतन की भाँति इसमें वास्तविक विषयों या क्रियाओं के बोध की आवश्यकता नही होती। इसमें संप्रत्ययों एवं सामान्यीकृत विचारों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार के चिंतन के विकास में भाषा का बहुत बड़ा हाथ होता है।

(iii) विचारात्मक या तार्किक चिन्तन :—

विचारात्मक चिन्तन में मानसिक क्रिया प्रयत्न एवं भूल का यांत्रिक प्रयास नही करती। विचारात्मक चिन्तन में ... को सामने रखा जाता है।

(iv) सृजनात्मक चिन्तन :—

इस चिन्तन का मुख्य उद्देश्य किसी नई चीज का निर्माण करना है। यह वस्तुओं,

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Mahuli, Samastipur

घटनाओं तथा स्थितियों कि प्रकृति की व्याख्या करने के लिए नए संबंधों की खोज करता हैं।

अभिसारी चिन्तन :-

अभिसारी चिन्तन में किसी मानक प्रसान का उत्तर देने में किसी सृजनात्मक योग्यता कि आवश्यकता नही होती। विद्यालयों में होने वाले अधिकांश कार्यों, बुद्धि आदि के परीक्षण के बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देने में अभिसारी चिन्तन का प्रयोग होता हैं।

क्रांतिक चिन्तन :-

क्रांतिक चिन्तन, चिन्तन का एक प्रकार होता हैं, जिसमें किसी विषय - वस्तु या समस्या के समाधान में कौशलयुक्त, संश्लेषण, मूल्यांकन तथा पुर्नसरंचना सम्मिलित होते हैं। क्रांतिक चिन्तन स्वनिर्देशित, स्वअनुशासित, सुनियोजित प्रकार का चिन्तन होता हैं।

* चिन्तन की विशेषताएँ :

* चिंतन मनुष्य के जीवन के दौरान निरंतर सामने आनेवाली वस्तुएँ नये अज्ञात गुणधर्मो को समझने कि

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College

आवश्यकता के कारण उत्पन्न होता हैं।
चिन्तन वाक् से अविवाच्यतः जुड़ा हुआ हैं और तात्विकतः नये कि तलाश व खोज कि एक समाज सापेक्ष प्रक्रिया हैं।
चिन्तन व्यावहारिक सक्रियता के आधार पर केन्द्रित ज्ञान से पैदा होता हैं और इसकी सीमाओं से कहीं दुर तक व्याप्ति रखता हैं।
यह विश्लेषण और संश्लेषण कि मदद से वास्तविकता का व्यवहित तथा सामान्यकृत परिवर्तन करने में सक्षम होता हैं।

निष्कर्ष :—
चिंतन के अंतर्गत हम विचार को जाँचते हैं, समालोचना करते हैं, उसके प्रति जागरूक होते हैं, तुलना करते हैं, प्रश्न प्रतिप्रश्न करते हैं अतः चिन्तन एक जटिल मानसिक प्रक्रिया हैं।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhakhuri, Samastipur

ST. PAUL TEACHER'S TRAINING COLLEGE

BIRSINGHPUR

SAMASTIPUR

EPC - 02

# ASSIGNMENT OF DRAMA & ART IN EDUCATION

B.Ed FIRST YEAR

SESSION - 2022-24

ROLL NO - 64

SUBMITTED BY - RANI KUMARI

09/10

R.K.

SUBMITTED TO

Classmate
Date :
Page : 1.

Q 1.) दृश्य कला का वर्णन करते हुए शिक्षा में इसके महत्व को बताएँ।

<u>प्रस्तावना</u> —

दृश्य कला कला का वह रूप है जो मुख्यतः दृश्य प्रकृति का होता है जैसे - रेखाचित्र, चित्रकला, मूर्तिकला, वस्तुकला आदि। इस कला में आकृति तथा रंग - संयोजन महत्वपूर्ण होता है। दृश्य कलाओं में कलाकार कई समाग्रीयों के प्रयोग से आकृति तथा रंगों का प्रयोग करता है। दृश्यकला से शिक्षण का उद्देश्य बौद्धिक मानसिक, शारिरिक विकास, सृजनात्मक व मौलिकता की अभिव्यक्ति और संस्कृतिक लोक परंपराओं और कलात्मक धरोहर के प्रति लगाव पैदा करना है। शिक्षा में दृश्यकला के प्रयोग से बच्चों का शारिरिक व मानसिक विकास होता है।

दृश्य कला मानव अनुभव का एक मुलभूत घटक है जो दुनिया और उस समय को दर्शाता है। जिसमें हम रहते हैं। कला हमारे इतिहास हमारी संस्कृति, हमारे जिवन और दूसरों के अनुभव को इस तरह से समझने में हमारी मदद कर सकती है। जिसे अन्य माध्यम प्राप्त नहीं किया जा सकता।

विभिन्न प्रकार की दृश्य- कलाओं के माध्यम से छात्रों को विषय वस्तु के प्रति आकर्षित करने का

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Patori, Samastipur

प्रयास किया जाता है तथा कुछ कलाएँ ऐसी भी होती है जिसमें छात्रों की स्वभाविक रूप से रूचि होती है। यदि उनका प्रयोग किया जाता है तो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावी बन जाती है। दृश्य कला पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण अंग है। इस प्रकार एक संवेदी अनुभव अधिक समय तक चलता है, क्योंकि ऐसे अधिगम मे एक जैसी संवेदी अंग सम्मीलित होते है। जिससे उनकी कल्पना अधिक सार्थक होती है।

कला का वह पक्ष या कलात्मक अभिव्यक्ति जिन्हें हम देख पाते है या जिनकी मूर्त अनुभूति होती है। दृश्य कला की श्रेणी मे आते है। जैसे - फोटोग्राफी, छपाई, चलचित्र, मूर्तिकला आदि।

दृश्य कला के प्रकार :—

दृश्य कला के दो प्रकार के होते है।

1) द्विआयामी या चित्रात्मक कलाएँ।
2) त्रिआयामी कलाएँ।

1) द्विआयामी या चित्रात्मक कलाएँ :—

इस कला का प्रयोग सपाट धरातल या कागज कार्डबोर्ड जमीन आदि पर बालक करते है। जिनके निम्नलिखित अंग है। —

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
... Samastipur

i) आरेखन और चित्रांकन :—

कलात्मक क्रियाकलापों में आरेखन और चित्रांकन की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसमें छोटे बालक आरेख बनाकर उसमें रंग भरते हैं। इसके माध्यम से ये बच्चे अपनी अनुभूतियों एवं विचारों और कल्पनाओं की अभिव्यक्ति करते हैं।

ii) छपाई कला :—

छपाई कला एक ऐसी कला है जिसमें एक सतह की बनावट को छाप द्वारा दूसरी सतह पर अंतरित करते हैं। जैसे - ब्लॉक छपाई, ठप्पा लगाना, उंगलियों छापना, हाथ - छापना आदि।

iii) समुच्चित चित्र (कोलाज बनाना) :—

किसी वस्तु के आरेखन को सजाने के लिए उस पर किन्हीं वस्तु या समाग्रीयों को चिपकाकर जो कलात्मक रचना बनाई जाती है, उसे समुच्च चित्र (कोलाज) कहते हैं। अर्थात कोलाज का अर्थ होता है किसी अन्य सतह पर वस्तुओं या समाग्रीयों को चिपकाकर बनाई गई कलात्मक रचना।

प्राथमिक स्तर पर कागजी कोलाज और मिश्रित कोलाज बहुत उपयोगी और रुचिकर होती है। कोलाज उपयोगी के साथ - साथ देखने में भी बहुत सुंदर लगता है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

Page: 4

2.) त्रिआयामी कलाएँ :—
मृतिका प्रतिरूपण लु आदि की पट्टी और मुखौटा निर्माण त्रिआयामी कलाएँ है।
यह क्रियाकलाप तीन आयामी (लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई) मे निर्मित कलाकृतियों को सजाने आदि में प्रयोग किया जाता है जो निम्न है। —

(i) मृतिका प्रतिरूपण :—
इसमें मिट्टी की उपयोगी त्रिआयामी कलाकृतियों अथवा वस्तुओं को सजाने, बनाने आदि मे किया जाता है।

(ii) तेल मृत्तिका :—
इसमें मिट्टी की व्यवसायिक क्षेत्रों में बच्चे इस मिट्टी से भिन्न - भिन्न कलाकृतियों का निर्माण करता है। इस मिट्टी मे अलसी का तेल मिलाकर उपयोग किया जाता है।

(iii) मिट्टी के बर्तन :—
मिट्टी के पात्र कुम्हार की क्रियाओं से परिचित कराकर पात्र बनाने की क्रियाकलाप कराया। जैसे क्रियाकलाप कक्षा 1 और 2 के छात्रों को विशेषकर मिट्टी के अण्डाकार आकृति बनाना, खेलने संबंधी पात्र बनाना आदि।

(iv) मुखौटा निर्माण :—
भिन्न - भिन्न जानवर आदि के

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Dhahuri, Samastipur

मुख आकृति बनाना और किसी व्यक्ति विशेष का रूप धारण करना।

## शिक्षा मे दृश्य कला का महत्व :—

दृश्य कला का शिक्षा मे महत्व बहुत अहम है। दृश्य कलाओं का प्रयोग शिक्षा को सरल एवं बोधगम्य रूप मे प्रस्तुत करने मे किया जाता है। इसका महत्व निम्न प्रकार से है। —

1.) **छात्रों की क्रियाशीलता :—** शिक्षण मे दृश्य कलाओं के प्रयोग से छात्रों मे क्रियाशीलता का प्रादुर्भाव होता है। इस प्रादुर्भाव के कारण छात्र शारीरिक एवं मानसिक रूप से क्रियाशील होते है।

2.) **सृजनात्मकता का विकास :—** दृश्य कला का प्रयोग जब विभिन्न विषयों के शिक्षण मे किया जाता है तो इससे बालकों मे सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है। बालक की स्वभाविक प्रवृति होती है कि वह अनुकरण करता है, इस अनुकरण की प्रक्रिया मे वह शिक्षक द्वारा प्रदर्शित नमूनो व चार्टों को स्वंय बनाने का प्रयास करता है। इस प्रकार बालक मे सृजन की प्रवृति विकसित होती है।

कला शिक्षा मे [illegible] का महत्वपूर्ण स्थान है, वैसे तो कला के माध्यम से कल्पना की अभिव्यक्ति होती है। लेकिन

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Narsinghpur
Jhahuri, Samastipur

जिस सहजता से कल्पनाओं की सार्थक अभिव्यक्ति दृश्य के माध्यम से होती है। वह अपने आप में अद्वितीय है। वास्तव में दृश्य कला कल्पना सोच तथा अनुभवों का मूर्तन है। दृश्य कला छात्रों के अशाब्दिक - भावों को सहजता से अभिव्यक्ति करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

निष्कर्ष :—

उपरोक्त विवरणों से स्पष्ट होता है कि शिक्षा के क्षेत्र में दृश्य कला का महत्वपूर्ण स्थान है। दृश्य कलाओं के माध्यम से छात्रों की क्रियाशीलता एवं सृजन शक्ति का विकास होता है। दृश्य कला की सबसे बड़ी विशेषता है। इससे संबंधित कार्यों का संग्रहण एवं दर्शन। वस्तुतः दृश्य कलाएँ आसानी से संग्रहित और प्रदर्शित की जा सकती है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College,
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

ST. PAUL TEACHER'S TRAINING COLLEGE

BIRSINGHPUR
SAMASTIPUR

EPC - 01

# ASSIGNMENT OF READING & REFLECTING ON TEXT

B.Ed FIRST YEAR

SESSION - 2022-24

ROLL NO - 64

SUBMITTED BY - RANI KUMARI

SUBMITTED TO

Q 1.) दिवास्वप्न – गिजुभाई बधेका पर प्रकाश डालें।

प्रस्तावना –

'दिवास्वप्न' एक ऐसे शिक्षक की काल्पनिक कथा है जो शिक्षा की दकियानूसी संस्कृति को अस्वीकारते हुए परम्परा और पाठ्यपुस्तकों का सचेत अवहेलना करके बच्चों के प्रति सरस और प्रयोगशील बना रहता है। दिवास्वप्न प्राथमिक शिक्षा जगत के लिए नवाचार शैक्षणिक प्रयोगों का एक छोटा-सा दस्तावेज है। पाठ्यपरक शिक्षा की रूढ़िवादी प्रक्रिया को तोड़ते हुए गिजुभाई ने प्राथमिक शिक्षा को प्रयोगिक और मौलिक रूप प्रदान करने का सफल प्रयास किया है। शिक्षक प्रधान शिक्षा के स्थान पर बालकेन्द्रित शिक्षा को महत्व दिया है। जिसके अंतर्गत बालक की रुचि, क्षमता और आवश्यकता के अनुरूप ही शिक्षण प्रक्रिया का स्वरूप निर्धारित किया जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक श्री गिजुभाई बधेका (1885-1939) पेशे से मूलतः वकील थे। जब इन्होंने अपने पुत्र की पढ़ाई लिखाई का जिम्मा अपने हाथों में लिया उसी समय से इनके शैक्षिक विचार क्रमिक प्रयोगों के द्वारा एक शैक्षिक दर्शन के रूप में संगठित होने लगे। इन्होंने 'मांटेसरी पद्धति' का गहन अध्ययन किया फिर उसी पद्धति को भारतीय परिवेश में

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur Samastipur

लागू करने की व्यावहारिक योजना बनाई। 1916 में उन्होंने भावनगर गुजरात में दक्षिणापूर्ति बाल मंदिर में अपनी योजना को अमली-जामा पहनाया। उन्होंने 'बाल-केन्द्रित शिक्षा का समर्थन किया और बाल देवो भव: का नारा बुलंद किया। प्रयोग के दौरान हुए अनुभवों को जब पुस्तक रूप देना आरंभ किया तो लगभग 200 पुस्तकें लिख डालें। इसमें से 20 पुस्तकों तो अभिभावकों और अध्यापकों के लिए ही थी। शेष शिक्षा के अन्य पहलुओं से संबंधित।

भारत में औपचारिक शिक्षा या यों कहें कि आधुनिक शिक्षा की शुरुआत ब्रिटिश शासन की देन थी। शिक्षा का मूल उद्देश्य अध्यापकों की उदासीनता के कारण अपने मार्ग से विचलित होने लगे तो अध्यापक की उदासिन मानसिक अवस्था को सहन करना विद्यालयी बच्चों की नियती बन गयी। विद्यालय की संस्कृति ही कुछ ऐसी बन गई कि दुनिया के हर छोटे-बड़े पहलू कक्षा की पढ़ाई से बाहर मानी जाती है। एक औसत शिक्षक यह मानकर चलता है कि उसका काम पाठ्यक्रम को पुरा करने की औपचारिकता निभाना और बच्चों को परीक्षा के लिए तैयार कर देना मात्र है। बच्चो की उत्सुकता का विकास शिक्षक न तो अपने जिम्मेदारी मे शामिल समझता है, न स्कूल मे ऐसी परिस्थितियाँ ही है, जिसमें वह अपनी जिम्मेदारी निभा सकें।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Biroinghpur
Madhupur, Deoghar

शैक्षिक संरचना में परिवर्तन लाने का सपना इस राह पर काफी संघर्ष करके ही सफल हो सकता है जिस पर गाँधी और टैगोर गिजुभाई से पहले कदम बढ़ा चुके थे। इन तीनों के शैक्षिक दर्शन का सार है कि बच्चों की स्वतंत्रता और स्वावलम्बन का माहौल बना देना। गिजुभाई ने 1920 मे अपने बाल मंदिर की स्थापना करके इस मूल सिद्धांत को एक संस्थाओं आधार दिया और फिर अपने दैनिक व्यवहार और लेखन मे उसके नाना आयामों को पहचाना।

लेखक महोदय का प्रयोग आरंभ होता है। पहले शांति के खेल से फिर कक्षा की सफाई की जाँच फिर सहगान और वार्तालाप के कार्यक्रम से लेकिन प्रयोग के पहले दिन का अनुभव अत्यधिक बुरा रहा। विद्यालय के शरारती बच्चे सारे कार्यक्रम पर पानी फेर दिया। नतीजतन लेखक महोदय को शीघ्र छुट्टी देनी पड़ी। सलाह और सबक के तौर पर प्रधानाध्यापक ने लेखक को तमाचा रसीद करने की आज्ञा दी। गोया विद्यालय मे बच्चों को शांत रखने का यही मात्र एक उपाय है, जबकि लेखक अध्यापक की भूमिका के उन्हीं भ्रमे जमाए धारणाओं को तोड़ने चले थे। उनका उद्देश्य तो बच्चों से प्रथमतः अंतरंगता और आत्मीयता स्थापित करना था जिससे श्रद्धा भाव पनप

PRINCIPAL
Teachers' Training College

और धीरे - धीरे छात्र उनकी आज्ञाओं को सहर्ष स्वीकार करने लगें।

प्रयोग का दूसरा दिन कहानी - वाचन से आरंभ होता है। प्रयोग दूसरे दिन से ही रंग लाने लगी। छुट्टी के प्रस्ताव पर भी बच्चे छुट्टी नहीं लेते हैं। पर हाँ, प्रधानाध्यापक का ताना लेखक महोदय के अगले दिन भी मिलता है लेकिन कक्षा की शांति पूरे विद्यालय में एक नवीन चेतना जाग्रत करती है।

कहानी वाचन की सफलता के बाद खेल - विधि द्वारा शिक्षा आरंभ हुआ। यह भी धीरे - धीरे सफल हुई। फिर आदेश वाचन द्वारा बच्चों में नैतिकता का विकास। फिर लोकगीतों के माध्यम से कविता - शिक्षण की नींव डाली गई। यह सब करते तीन महीने निकल गए। कई सफलताएँ तो मिली पर पाठ्यक्रम काफी पिछड़ा था। एक बार फिर प्रधानाध्यापक और अन्य अध्यापकों का ताना आरंभ हो गया पर लेखक अपनी सृजनशीलता और आत्मीयता के मार्ग पर डटे रहे।

प्रयोग के बीच में जब लेखक महोदय ने बच्चों की पाठ्य पुस्तक देखे तो वहाँ भी समस्याओं का अंबार लगा था। किसी में दृष्टिकोण पुराना था तो कोई पूरी तरह व्यवसायिक दृष्टि से ही लिखी गई थी। किसी की शैली ही दोषपूर्ण थी। कई

पुस्तक के तथ्य और प्रस्तुति बच्चों की उम्र से मेल नहीं खाते थे। एक शब्द में कहा जाए तो नीरस या बेकार। आखिर बच्चों को ऐसी पाठ्यपुस्तकों के सहारे कक्षा में कितना सरस बनाया रखा जा सके। ये बड़े अफसोस की बात है कि इतने शैक्षिक दर्शनों और सिद्धांतों के विकास के बाद आज भी समस्याएँ बनी हुई हैं। लेखक महोदय ने हर पाठ्यपुस्तक की विषय वस्तु के लिए अपनी एक अलग शैली बनाई जिनमें सहजता, सरलता और रोचकता का समावेश था।

इसी प्रकार लेखक ने परिक्षा की भी एक पृथक शैली अपनाई जो बड़े नाटकीय अंदाज में सम्पन्न हुई। दर्शक बने अध्यापक, विद्यालय के अन्य अध्यापक और उच्च वर्गों के कई छात्र। परीक्षार्थी छोटे - छोटे टोली में बँटकर दृश्यांत प्रस्तुत करते जाते, अपनी - अपनी भूमिका निभाते जाते और उसी क्रम में उनकी भाषाई पकड़ व्याकरण ज्ञान और विषयों के प्रति समय की मौलिकता भी प्रमाणित होती जाती।

लेखक के प्रयोग की सबसे बड़ी उपलब्धी थी शैक्षिक प्रक्रियाओं के माध्यम से जीवन की व्यवहारिक तैयारी। विद्यालय के समय में ही सभी छात्रों को नदी किनारे सैर करवाकर उन्हें न केवल प्राकृतिक होनी से परिचित कराया गया बल्कि भूगोल विषय की बच्चों के मानस पटल पर सशक्त नींव भी रखी गई।

इसी प्रकार खेल - खेल मे बच्चों से ही एक कमरे को सजाने को कहा गया। और मात्र छः महिने की मेहनत मे बच्चों ने विद्यालय के एक कमरे को कलापूर्ण संग्रहालय बना दिया। इसी क्रम मे विद्यालय ग्राम और अपने जीवन मे सँवारने के महत्व से भी रूबरू हुए।

वर्षांत मे प्रयोग के सफल परिणामों ने सभी अध्यापकों को ही नहीं बल्कि उच्च अधिकारियों को भी अभिभूत कर लिया। पर अंत मे भी लेखक महोदय ने अति महत्वपूर्ण प्रस्ताव दिया। अधिकारीगण सभी छात्रों को अगली कक्षा मे प्रवेश देना चाहते थे। जबकि लेखक महोदय कुछ छात्रों को विद्यालय से निकालने की सलाह दे रहे थे। किसी दंड स्वरूप नहीं। बल्कि उसकी किसी विशिष्ट प्रतिभा को निखारने हेतु उस वातावरण मे आरंभ से ही डालने के लिए। लेखक का कहना था कि ये छात्र विद्यालय के लिए अयोग्य नहीं है बल्कि विद्यालय ही उन छात्रों के लिए अयोग्य है। लेकिन जो छात्र सचमुच बौद्धिक विकास मे कमजोर थे लेखक उसे अगले दर्जे मे रखकर और अधिक सशक्त बनाना चाहते थे।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College

अतः 'दिवास्वप्न' लिखी गई कहानी की शैली मे परंतु इसमें जो शैक्षिक संदेश दिए गए हैं वे एकतरफ आज के शैक्षिक व्यवस्था पर करारा प्रहार भी करती है तो दूसरी तरफ हर समस्या

समाधान के लिए उचित उपाय भी सुझाती है। हर विषय के शिक्षण प्रशिक्षण के लिए इसमें आदर्श – प्रणाली की झलक भी दिखाई गई है साथ ही हर शैक्षिक प्रक्रिया का एक नवीन रचनात्मक विकल्प भी।

यह पुस्तक एक तरफ छात्रों में रचनाशीलता, उत्सुकता, क्षमता विकास आदि के लिए आवश्यक विधियों क्रियाकलापों का विवेचन करती है तो दूसरी तरफ यह अध्यापकों को भी अपने कर्तव्य के प्रति सचेत करती है। जबतक अध्यापक खानापूर्ति तक अपनी भूमिका को सिमित रखेंगे तब तक ना तो वे छात्रों के श्रद्धा का पात्र बनेंगे और ना ही समाज समुदाय में सम्मान के पात्र बन पाएंगे।

✡ <u>निष्कर्ष</u> :–

उपर्युक्त सभी तथ्यों को ध्यानपूर्वक पढ़कर यह आभास होता है कि दिवास्वप्न एक सफल डायरीनुमा पुस्तक है। जिसमें बाल-मनोविज्ञान और शैक्षणिक विचारों को कथा शैली में प्रस्तुत करने वाले अप्रतिम लेखक गिजुभाई के अध्यापकीय जीवन के अनुभवों का सार छुपा है।

R.H.B.

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Bhimpur, Samastipur

ST. PAUL TEACHER'S TRAINING COLLEGE BIRSINGHPUR

NAME - RASHMI PRIYA

CLASS - B.Ed. 2nd year

SUBJECT - C-7B Pedagogy of Social Science

COLLEGE ROLL NO - 77(B)

DATE - 10-10-2022

SUBMITTED BY:-
Rashmi Priya

SUBMITTED TO:-

प्र० सं०:- 1
भूगोल का उद्देश्य और उसकी प्रकृति का विस्तार से उल्लेख किजिए।

उ०:-

प्रस्तावना :-

पाठ्यक्रम मे भिन्न-भिन्न विषय किसी-न-किसी सीमा तक शिक्षा के साधारण उद्देश्यो की पुर्ति मे सहायक होते है। शिक्षा के उद्देश्य ही विभिन्न विषयो के शिक्षण के उद्देश्यों है। यह नियम भूगोल के साथ भी है। भूगोल शिक्षण के निम्नांकित मुख्य उद्देश्य है :-

i) सहानुभूति की भावना उत्पन्न करना :-

भूगोल शिक्षण द्वारा विद्यार्थियो मे देश - विदेशो के निवासियो के प्रति सच्ची सहानुभूति उत्पन्न की जा सकती है। संसार के विभिन्न भागो का वर्णन, वहाँ के निवासियो के रहन-सहन पर भौगोलिक परिस्थितियो का प्रभाव जानकर वहाँ हम अपने जीवन को भलि-भाँति समझ सकते है और हमे यह भी ज्ञात होता है कि संसार के भिन्न-2 देश किस प्रकार कच्चा माल तथा अन्य खाद्य पदार्थो द्वारा दूसरे देशो के निवासियो की जीवन रक्षा करते है। भूगोल शिक्षक तथा विद्यार्थी सारे-संसार को कुटुम्ब समझता है। उसके हृदय मे मानवता के प्रति प्रेम और सहानुभूति जाग्रत होती है।

Principal
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Mahuri, Samastipur

विश्व में एकता की भावना तथा मानवता के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करना ही भूगोल शिक्षण का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

(ii) सामाजिक दर्शन :-
भूगोल सामाजिक विषय का अंग है। इसके ज्ञान के आधार पर विद्यार्थी ठीक प्रकार अपने सामाजिक वातावरण का अध्ययन कर सकता है। इस विषय के अध्ययन के द्वारा ही हम प्रकृति तथा समाज दोनों में गहरा सम्बंध स्थापित करते है तथा व्यक्तियों और सामाजिक समुदायों के मध्य रहने वाले अन्योन्याश्रय सम्बंध से परिचित होते हैं।

(iii) बंधुत्व की भावना जाग्रत करना :-
भूगोल विषय बंधुत्व की भावना को जाग्रत करने में सहायक होता है। परन्तु साथ-ही-साथ देश प्रेम की भावना को भी प्रोत्साहित करता है। छात्र को अपने देश के भूगोल का अध्ययन करते समय प्रकृति द्वारा दिये गए गगनचुम्बी विशाल पर्वत, वन, नदिया तथा खनिज पदार्थ आदि सुन्दर प्रकृति वरदानों का अध्ययन करते हैं, जिसके कारण उनका देश उन्नति कर रहा है। इस प्रकार के अध्ययन से बालकों के दिल में देश प्रेम की भावना उत्पन्न होती है।

(iv) विद्यार्थियों की मानसिक शक्ति का विकास :-
भूगोल के अध्ययन द्वारा

शिक्षक को विद्यार्थियो की मानसिक शक्तियो का विकास होता है। दूसरे देशो के निवासियो के जीवन के विषय के पढ़ते समय बहुधा हमे कल्पना करनी पड़ती है। पिगमिज़ पेड़ पर अपने मकान किस प्रकार बनाते होगे, एस्किमो इगल मे किस प्रकार रहते होगे ? विभिन्न प्रकार के देशो के विषय मे पढ़ते समय हमें काल्पनिक चित्र बनाने पड़ते है। भूगोल शिक्षक को चाहिए कि वह बालको की कल्पना शक्ति का विकास करें।

v) जीवकोपार्जन मे सहायक :- भूगोल शिक्षण का उद्देश्य है कि विद्यार्थियो को ऐसा ज्ञान देना, जिससे जीविका चलाने तथा जीवनयापन मे सहायता मिले तथा छात्र उस ज्ञान को दैनिक जीवन मे विद्योपार्जन काल तथा उसके बाद भी प्रयोग मे ला सकें। छात्रों को उद्योग धन्धो के विषय मे ज्ञान हो सकें तथा इस भौगोलिक ज्ञान को वह वाणिज्य - व्यवसाय, कृषि तथा उद्योग धन्धो मे उपयोग कर सकें।

vi) प्रकृति प्रेम उत्पन्न करना :- भूगोल प्रकृति प्रेम उत्पन्न करता है। कौन ऐसा मनुष्य होगा, जिसका हृदय हिमालय की गगनचुम्बी बर्फ मे ढकी हुई चोटियो को देखकर हर्ष से अह्लादित नही होता होगा ? [illegible] हरे-भरे

St. Paul Teachers' Training College, Bhagalpur, Jhanjhi ... (stamp)

वन तथा उसमे बसने वाले पशु-पक्षी, झरनो का कल-कल नाद हमेशा से मनुष्य की सौन्दर्य भावना जागृत करता है। भूगोल शिक्षण का कर्तव्य है कि छात्रो मे उचित सौन्दर्य भावना का विकास करे।

iii) भूगोल विषय मे अभिरुचि :—
भूगोल अध्ययन द्वारा छात्रो मे यात्रा करने की रुचि, समाचार पत्र पढ़ने की इच्छा, मॉडल बनाने की प्रवृत्ति, रेखाचित्र और चित्र एकत्रित करने की इच्छा तथा उनके प्रिय एवं रुचिकर लगने वाले कार्यों को प्रोत्साहित किया जा सकता है ये सभी कार्य विद्यार्थी अपने अवकाश प्राप्त समय मे कर सकते है।

iii) मस्तिष्क को विस्तृत करना :—
भूगोल मस्तिष्क को विशाल तथा विस्तृत बनाता है। स्थानीय संकुचित क्षेत्र से ऊपर उठकर हमे विशाल विश्व रंगमंच की कल्पना कराता है। अनभिज्ञ स्थानो तथा मनुष्यों के विषय मे अध्ययन करने से हमारी संकीर्णता जातीयता तथा पृथकत्व की भावना दूर होती है। पृथ्वी के विशाल विस्तार तथा उसमे होने वाली विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक क्रियाओ के विषय मे अध्ययन करने से मस्तिष्क उन्नत तथा विस्तृत होता है।

* भूगोल की प्रकृति (Nature of Geography)

भूगोल वह विषय है जिसमे प्रत्येक कार्य या घटना चाहे वह प्राकृतिक हो या मानवीय से सम्बंधित कार्य कारण सम्पर्क को विश्लेषित करने के लिए किया जाता है। अतः यह कहना उचित ही है कि भूगोल विषय की प्रकृति विश्लेषणात्मक है।

- भूगोल की प्रकृति का क्षेत्र काफी व्यापक होता है।
- भूगोल का क्षेत्र व्यापक इसलिए होता है क्योंकि इसका सम्बंध कई विषयों से जुड़ा होता है।
- यह बालकों मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विस्तार करता है।
- भूगोल का विषय के रूप मे क्षेत्र विस्तृत होता है। इसमे भौगोलिक एवं मानवीय क्रिया-कलापों का अध्ययन किया जाता है।
- इसमे प्राकृतिक वातावरण का विस्तार से अध्ययन किया जाता है।
- पृथ्वी का आकार, उसकी आकृति, धरातल, प्राकृतिक संरचना, खनिज, मिट्टी, जलवायु, वनस्पति, जीव जन्तु आदि के बारे मे जानकारी भूगोल विषय के माध्यम से ही हो पाता है।

प्रश्न :- 2
भूगोल की परिभाषा कीजिए। माध्यमिक स्तर पर भूगोल शिक्षण की व्याख्या करें।

उत्तर :-

भूमिका :

संसार में प्रतिदिन ही कहीं न कहीं कोई रोमांचकारी घटना घटती ही रहती है। इनका सही आनन्द वही उठा पाते है जिन्हे संसार की सही जानकारी हो और यह भूगोल के पढ़ने से ही प्राप्त हो सकता है।

भौगोलिक घटनाएँ, प्रकृति के विभिन्न तत्व जाने अनजाने में ही बालको का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेते है तथा बालक की जिज्ञासाओ को पैदा करते है। विद्यालयो मे भूगोल शिक्षण अनिवार्य होना चाहिए तभी बालको की रुचि इस विषय के प्रति बढ़ाई जा सकती है। भूगोल जैसे जीवन्त और रोचक विषय का अध्ययन अपने परिवेश की जानकारी हेतु जरूरी है।

भूगोल के आधुनिक स्वरूप को ठीक तरह से समझने के लिए उसके प्राचिन रूप को भी समझना जरूरी है। प्राचिन काल से ही मनुष्य पृथ्वी की आकृति और उसके विभिन्नता के विषय में जिज्ञासु रहा है। अपने निवास - स्थान के आसपास वह दूसरे

# St. PAUL TEACHER'S TRAINING COLLEGE

## BRSINGHPUR SAMASTIPUR

(A constituent unit of L.N.M.U, DARBHANGA)

## BACHELOR OF EDUCATION

**Session – 2021 – 23**

# ASSIGNMENT

## Course : - 09 Assessment of Learning

**Submitted by : -**


**Name : - KANCHAN KUMARI**

**Class Roll No : - 78**

**Section : - B**

**University Roll No : - 2241307**


19/20

Kanchan Kumari
Signature of Student

Signature of Lecturer

*Date of receiving assignment .....*

1 आकलन से क्या समझते है ? इनके विभिन्न उपकरणों का वर्णन करें।

भूमिका
(Introduction)

आकलन की प्रक्रिया में शैक्षिक उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए तथा विद्यार्थियों द्वारा अर्जित ज्ञान को परखने के लिए आकलन किया जाता है। कक्षा की अध्यापन प्रक्रिया में छात्रों के तीन पक्ष होते है। ये तीनों पक्ष इस प्रकार है —

(i) ज्ञानात्मक पक्ष
(ii) भावनात्मक पक्ष
(iii) मनो ~~शारि~~ शारीरिक पक्ष

ये तीनों पक्ष अध्यापन प्रक्रिया में ही विकसित होते हैं। आकलन के द्वारा ज्ञानात्मक पक्ष को मापा जाता है। यह एक सतत प्रक्रिया है, जिसके द्वारा परिणात्मक तथा गुणात्मक दोनों ही प्रकार की सुचनाएँ प्राप्त होती है।

आकलन का अर्थ :— इसके द्वारा सुचनाएँ एकत्रित की जाती हैं। इसमें छात्रों का बिना अंक तथा ग्रेडिंग के मूल्यांकन किया जाता है। आकलन को सीखने की प्रक्रिया का एक हिस्सा भी कहा ज

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsingpur
Samastipur

सकता है। इससे अभिप्राय सीखने - सीखाने की प्रक्रिया में सुधार करने से हैं। इससे शिक्षण के तरीकों आदि में बदलाव करने का भी मौका मिलता है।

आकलन की परिभाषा (Definition of Assessment) :→

डुबा और फ्रीड के अनुसार :—
"आकलन सूचना संग्रहण तथा उसपर विचार विमर्श की प्रक्रिया है जिन्हें हम विभिन्न माध्यमों से प्राप्त करके यें जान सकते हैं कि विद्यार्थी क्या जानता है, समझता है, अपने शैक्षणिक अनुभव से प्राप्त ज्ञान को परिणाम के रूप में व्यक्त कर सकता है जिसके द्वारा छात्र के अधिगम में वृद्धि होती हैं।"

इरविन के अनुसार :—
"आकलन छात्रों के अधिगम एवं विकास का व्यवस्थित आधार का अनुमान हो यह किसी भी वस्तु को परिभाषित कर चयन, रचना, संग्रहण, व्याख्या, विश्लेषण तथा सुचनाओं का उपयुक्त प्रयोग कर छात्र मे विकास तथा अधिगम को बढ़ने की प्रक्रिया है।"
उपर्युक्त परिभाषाओं तथा अर्थ के माध्यम से ज्ञात होता है कि आकलन होता क्या है?

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

आकलन के उपकरण :— आकलन की योजनाओं में भिन्न निम्न ~~विधायों~~ विधियों को अपनाया जाता है —

1) पोर्टफोलियों :— पोर्ट फोलियो विद्यार्थियों द्वारा किए गए कार्यों का संग्रह होता है। ये कार्य निश्चित अवधि में किए गए कार्य है। इस संग्रह में विद्यार्थियों के नमुने ही होते है जो रोजमरी के कार्य भी हो सकते हैं।

2) प्रदत्त कार्य (Assignment) :— विद्यार्थियों को गृह-कार्य के रूप में दिए गए कार्य को ही प्रदत्त कार्य कहा जाता है। अर्थात जो ~~कार्य~~ भी टॉपिक विद्यार्थी हाल ही में किया है, उससे संबंधित कार्य प्रदत्त कार्य हैं।

3) परियोजनाएँ (Projects) :— परियोजनाओं के माध्यम से आँकड़ो एवं आँकड़ो का संग्रह और विश्लेषण किया जाता है। अगर सही मायने में देखा जाए तो परियोजनाओं में किसी भी कार्य को प्रैक्टिकल रूप में किया जाता है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhajhuri, Samastipur

4.) अवलोकन (observation):— छात्रों की शिक्षा और उनकी रुचियों के बारे में जानकारियाँ समय-समय पर एकत्रित की जानी चाहिए। इस तरह अवलोकन कार्य आसान हो जाता है।

5.) रेटिंग स्केल (Rating scale):— रेटिंग स्केल का उपयोग करके छात्रों की गुणवत्ता जाँची जाती है।

6.) चेक लिस्ट (Check List):— चेक लिस्ट के द्वारा छात्रों के व्यवहार, लक्षण, गतिविधियों तथा विशेषताओं के बारे में जानकारी होती है।

7.) स्व आकलन (self Assessment):— स्व आकलन के अंतर्गत छात्र अपना आकलन खुद कर पाते हैं। इस तरह उनको अपनी प्रगति तथा वर्तमान स्थिति का भी पता लगता है।

8.) विद्यार्थियों के साक्षात्कार (Interview):— साक्षात्कार में सीधे सवाल-जवाब किए जाते हैं। विद्यार्थियों के साक्षात्कार कर के उनके समक्ष और विचारों को जाना जा सकता है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Sambalpur

9.) मौखिक परीक्षा (Oral Exams) :— इसके अंतर्गत छात्रों से मौखिक रूप से सवाल जवाब किये जाते हैं। यह समय बच्चों और छात्रों की समझ जानने की कोशिश करता है।

10.) लिखित परीक्षा (Written Exams) :— लिखित परीक्षाओं के माध्यम से भी छात्रों की समझ और ज्ञान को जानने का प्रयास किया जाता है।

आकलन के तरीके :—

सभी छात्रों को समान रूप से समझ प्राप्त नहीं होती। कुछ छात्र बहुत जल्दी चीजों को सीख जाते हैं तथा कुछ देरी से। अतः आकलन की प्रक्रिया छात्रों को ध्यान में रखकर की जानी जरूरी है इसको बालकेंद्रित शिक्षावली भी कहा जाता है।

कुछ समय पहले तथा अध्यापक केंद्रित शिक्षावली प्रचलित थी किन्तु अब दोनों में सामंजस्य बिठा कर पढ़ाया जाता है।

निष्कर्ष :—

उपर्युक्त अधोलिखित बातों के अनुसार आकलन का प्रयोग करके बच्चों या छात्रों की शिक्षा प्रगति को देखा जाता है। और इस से बच्चों की प्रगति के बारे में जानकर उनके लिए शिक्षण विधियों का निर्माण किया जाता है।

10